निबन्ध-सूची

	नाम	पूर्व प्रकाशन	पृष्ठ
१.	रात्रि भोजन त्याग	("दि० जैन" विशेषाक से १९८४ वर्ष २१)	१
२.	पचकल्याणक तिथिया और नक्षत्र	(बाबू छोटेलाल जी स्मृति ग्रन्थ सन् १९६८)	११
३	नदीश्वर भक्ति का १८वा पद्य	("वीरवाणी" जुलाई ६८)	२५
४	अलब्धपर्याप्तक और निगोद	("अनेकात" अक्टूबर ६९)	२९
५	ऐलक की आहार चर्या	("जैन सिद्धात" मासिक वीर स २४५७)	६१
६	प० टोडरमलजी और शिथिलाचारी साधु	("वीरवाणी" मार्च ६७)	७६
७	चामुण्डराय का चारित्रसार	(जैन सिद्धात भास्कर" दिसम्बर ३५)	९७
८	राजाश्रेणिक का आयुष्य काल	("अनेकात" जून ६७)	१०४
९	चातुर्मास योग	("अनेकात" जून १९६६)	११९
१०	सिद्धाताध्ययन पर विचार	("दि० जैन" विशेषाक वि स. १९८६ वर्ष २३)	१२६
११	भट्टारक सकलकीर्ति का जन्मकाल	("वीरवाणी" १८ सितम्बर ६९)	१३८
१२.	जैन धर्म मे जीवो का परलोक	("कल्याण" पुनर्जन्म विशेषाक ६९)	१४३

	नाम	पूर्व प्रकाशन	पृष्ठ
१३	क्या चन्द्र सूर्य का माप छोटे योजनो से है ?	("वीरवाणी" १ दिसम्बर ६८)	१५१
१४	आर्यिकाओ का केशलोच	("सन्मति सदेश" मार्च ६७)	१५५
१५.	जैनधर्म मे नागतर्पण	('सन्मति सदेश" मई ६८)	१६२
१६	प्रतिष्ठा तिलक कार नेमिचन्द्र का समय	("अनेकांत" अप्रेल ६८)	१६६
१७	जिनवाणी को भ्रमात्मक लेखन से बचाइये	("दि० जैन" विशेषाक वि स १९८५ वर्ष २२)	१७३
१८	प० आशाधरजी का विचित्र विवेचन	('दि० जैन" विशेषाक स. १९८७ वर्ष २४)	१८५
१९	समाधिमरण के अवसर पर मुनि-दीक्षा	("महावीर जयती स्मारिका" सन् ६९)	२०२
२०.	कातत्र व्याकरण के निर्माता कौन है ?	("जैन सिद्धात भास्कर" स १९९३)	२१३
२१	भगवान् महावीर तथा अन्यतीर्थंकरो के वश	("सन्मतिवाणी" मई ७१)	२२०
२२	दि० परम्परा मे श्रावक धर्म का स्वरूप	(जिनवाणी" मार्च ७०)	२२९
२३.	प० टोडरमलजी का जन्म काल तथा उनकी एक और साहित्यिक रचना	("सन्मति सदेश" दिसम्बर ६८)	२५३
२४	क्या पउमचरिय दि० ग्रन्थ है ?	("दि० जैन" विशेषाक स १९८८ वर्ष २५)	२६३
२५	प्रतिष्ठाचार्यो के लिए विचारणीय विषय	मोक्षकल्याणक ("सन्मति सदेश" अप्रेल ७०)	२८४

	नाम	पूर्व प्रकाशन	पृष्ठ
२६	नवकोटि विशुद्धि	("सन्मति सदेश" सितम्बर ६६)	२८७
२७.	अटाई द्वीप के नक्शे मे सुधार की आवश्यकता	("सन्मति सदेश" फरवरी ६७)	२६०
२८	कतिपय ग्रन्थकारो का समय निर्णय	(महावीर जयन्ती स्मारिका सन् ७२)	२६५
२६	अजैन साहित्य मे जैन उल्लेख और साम्प्रदायिक संकीर्णता से उनका लोप	(महावीर जयन्ती स्मारिका ७१)	३०६
३०	मूर्ति-निर्माण की प्राचीन रीति	(महावीर जयंती स्मारिका सन् ६८)	३३०
३१	पीठिकादि मत्र और शासनदेव	(महावीर जयती स्मारिका सन् ७०)	३३६
३२	जैनधर्म मे अहिंसा की व्याख्या	("दिव्यध्वनि" जनवरी ६६)	३५४
३३	जैनधर्म श्रेष्ठ क्यो है ?	(ट्रेक्ट, मार्च ३१)	३६५
३४	दर्शनभक्ति (माथुरसघी) का शुद्ध पाठ	(जैन सदेश शोधाक न. २७ नवम्बर ६८)	३६३
३५	जैन खगोल विज्ञान	(मरुधरकेशरी अभिनन्दन ग्रन्थ सन् ६८)	३६६
३६	छप्पन दिक्कुमारियें	("जैनसदेश" १३-३-६६)	४२७
३७	द्रव्यसग्रह का कर्त्ता कौन ?	("जैनसदेश" ५-१-६७)	४३२
३८	हवनकुण्ड और अग्निभय	("जैनसदेश"१६-११ ६१)	४४२
३६	मूलाचार का सस्कृत पद्यानुवाद	(जैनगजट १४-१२-६७)	४४६
४०	परकायाप्रवेश एक सत्य घटना	('जैनसदेश" ७-१-७१)	४५५

	नाम	पूर्व प्रकाशन	पृष्ठ
४१	नदीश्वर द्वीप मे ५२ जिनालय	('जैनगजट, २१-८-६७)	४६१
४२.	तिलोय पण्णत्ती अनुवाद पर गलत स्पष्टीकरण	(जैनगजट, १६-११-६७)	४६७
४३	भगवान् की दिव्यध्वनि ("वीर"	जुलाई-अगस्त ३६)	४७३
४४	जन कर्म सिद्धांत (श्रमणोपासक" ५ अक्टूबर ६७)		४८८
४५.	क्या कभी जैनीभाई भी विद्वानो का आदर	करना सीखेंगे ? (जैनसदेश, अप्रैल ६६)	५१६
४६.	वास्तुदेव (जैनसदेश, १८-४-६८)		५२३
४७	श्री सीमधर स्वामी का समय (जैनसदेश,	२ जून ८३)	५२८
४८.	तत्वार्थ श्लोक वार्त्तिक की हिन्दी टीका का	अवलोकन (जैनसदेश, जुलाई ६६)	५३७
४९.	श्रावक की ११वी प्रतिमा (जैनसदेश, ८ मई ६६)		५४४
५०.	साधुओ की आहारचर्या का समय (जैनगजट,	१४ सितम्बर ६७ जैनसदेश, १५-२३ अगस्त ६८	५६६
५१	दयामय जैनधर्म और उसकी देव पूजा	(जैनमित्र ६ दिसम्बर सन् २६)	
		(जैनसदेश २७ फरवरी ८६)	६११
५२	क्षपणासार के कर्त्ता माधवचन्द्र	("अनेकांत" जून सन् १९६५)	६२२
५३	उद्दिष्ट दोष मीमासा	("जैनसदेश" ११, १८ जुलाई सन् १९६८)	६३३
५४	पूज्यापूज्य विवेक और प्रतिष्ठा पाठ (जैनसदेश)		६५९

नाम	पूर्वप्रकाशन	पृष्ठ
५५. प० जौहरीलाल जी रचित विद्यमान विंशति तीर्थंकर पूजा पर विचार ("जैनमित्र" नवम्बर ६६)		६७४

संशोधने

नोट–पृष्ठ ६१ पर निबन्ध का न० ४ दिया है वहाँ ५ होना चाहिये इसीतरह पृष्ठ६७ पर निबन्ध का नं० ६ दिया है वहाँ ७ होना चाहिये। पृष्ठ १०४ पर नं० ७ दिया है वहाँ ८ होना चाहिये, पृष्ठ ११६ पर ८ दिया है वहाँ ६ होना चाहिये, पृष्ठ १२६ पर ६ दिया है वहाँ १० होना चाहिये। सिर्फ निबन्धो के न० मे गडबड है और कोई गडबड नही है। आगे क्रम न० ठीक हो गया है जहाँ गडबड है कृपया वहाँ पहिले से ठीक कर लेवे।